MAHARSHI DAYANAND UNIVERSITY, ROHTAK
(A State University under Haryana Act No. XXV of 1975)
NAAC Accredited 'A+' Grade
Email: hod.economics@mdurohtak.ac.in
DEPARTMENT OF ECONOMICS

No. Eco./2022/F-26/184 **Dated: 11.05.2022**

प्रेस विज्ञप्ति

रोहतक 11 मई. पढाई को जीवन से जोड़ कर देखने; गलत-सही में फर्क करने तथा नहीं दिखता उसे देख पाने की क्षमता के विकास में अच्छी किताबे और मूल लेख पढ़ने और सवाल पूछने की आदत के जरिये सीखने के गुर आर्थिक-सामाजिक वयवस्थाओ के मर्मज्ञ और प्रसिद्द लोक बुद्धिजीवी प्रो राजिंदर चौधरी ने अर्थशास्त्र विभाग में साझा किये।

वे आज 'अर्थशास्त्र का अध्ययन कैसे किया जाए: व्यावहारिक उपयोग की कुछ सलाह' विषय पर विस्तार-व्याख्यान दे रहे थे।

जो चीज पढ़ रहे हैं, वो क्यों पढ़ रहे हैं और पाठ्यक्रम में जो है वो क्यों है, ऐसे सवालों से यह तलाश शुरू होती है कि जीवन में इनका क्या उपयोग होगा। मूल्य और मजदूरी की दरों में अंतर के मजेदार उदाहरण देते हुए उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि बाजार सरंचनाओं को गहराई से समझा जाए।

उन्होंने कहा कि अर्थशास्त्र सिखाता है कि मौजूद और मुमकिन विकल्पों में से कैसे कौन सा चुना जाए। परन्तु केवल व्यक्तिगत लाभ और हानि देखने से काम नहीं चलेगा। सही और गलत का फैसला करना सामाजिक दृष्टि से बहुत जरुरी है। कल्पनाशीलता के साथ बेहतर अर्थव्यवस्था और समाज बनाने का सपना देखना समाज-विज्ञानं का मुख्य: काम हैं। उन्होंने कहा कि व्यक्तिगत इकाई और सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के अध्ययन के लिए बनी अर्थशास्त्र की माइक्रो और मैक्रो शाखाओं की मान्यताये परस्पर मेल नहीं खाती और यह अर्थशास्त्र का बड़ा संकट है।

समझना प्रमुख है, रट्टा नहीं। इस सन्दर्भ में उन्होंने बल देकर कहा कि अच्छी किताब और मूल मौलिक लेख पढ़ना परम आवश्यक है। इस बारे में उन्होंने कहा कि प्रामाणिक किताबे अंग्रेजी में हैं तो भी उनको पढ़ने समझने का हुनर सीखना कोई असंभव काम नहीं है।

देश की आज़ादी के तुरंत बाद विश्व प्रसिद्ध पुस्तकों के हिंदी अनुवाद की परंपरा के लोप पर दुख प्रकट करते हुए उन्होंने कहा कि किताबों को जरुरत की दृष्टि से देखने और अच्छी किताबें लिखने की जरुरत है। 'सवाल नहीं पूछेंगे तो सीखेंगे नहीं' का उद्घोष करते हुए उन्होंने कहा कि अपने से किताब से और शिक्षक से सवाल करते रहना चाहिए। इस उलझन के बारे में कि कौन सी किताब पढ़ी जाए, प्रो चौधरी ने कहा कि तीन चीज़ो-लेखक, प्रकाशक तथा लेखक की संस्था- के जानेमाने होने से किताब की गुणवत्ता का पता लगता है।

अर्थशास्त्र विभाग के शिक्षक डॉ राजेश कुमार ने वक्ता का परिचय करवाया तथा डॉ किरण बाला ने भारी संख्या में मौजूद विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं सुधीजनों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

11.5.22

हिम्मत सिंह रतनू,
अध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग
Head,
Department of Economics
M.D. University, Rohtak